International Journal of Applied Research 2019; 5(12): 118-120

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(12): 118-120
www.allresearchjournal.com
Received: 21-10-2019
Accepted: 25-11-2019

डॉ0 पूजा यादव
शांति निकेतन, सुंदरपुर बेला, परमेश्वर चौक, दरभंगा, बिहार, भारत

Correspondence Author:
डॉ0 पूजा यादव
शांति निकेतन, सुंदरपुर बेला, परमेश्वर चौक, दरभंगा, बिहार, भारत

महिला सशक्तिकरण एवं दलित महिलाओं की धारणाः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ0 पूजा यादव

सारांश
यह पत्र सशक्तिकरण की प्रक्रिया में दलित महिलाओं पर आधारित है। भारतीय समाज में दलित महिलाएँ सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से वंचित हैं। जाति एक महत्वपूर्ण कारक है जो सशक्तिकरण की प्रक्रिया निर्धारित करती है। यह पत्र दलित महिलाओं के विकास के क्षेत्रों की पड़ताल करता है, जिनके कारण भेदभाव और शोषण होता है। यह सशक्तिकरण के सिद्धांतों और दलित महिलाओं की चुनौतियों की जांच करता है, और शक्तिहीनता, गरीबी, सामाजिक अलगाव, दुरुपयोग, संसाधनों की पहुंच में कमी और भागीदारी के संदर्भ में जाति और लिंग संबंधों की आलोचना करता है। सशक्तिकरण का अर्थ है, व्यक्ति और समूह की क्षमताओं को मजबूत करना, जिससे यह विकास प्रक्रिया में परिवर्तित हो। यह महिलाओं को कौशल और क्षमता हासिल करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो उन्हें जीवन में बाधाओं को दूर करने और समाज में सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार करने की अनुमति देता है। सशक्तिकरण के सिद्धांतों में लैंगिक असमानता को खत्म करने पर ध्यान देने के साथ भागीदारी प्रक्रिया शामिल है। इसे विकास दृष्टिकोण कहा जाता है। सामाजिक विकास की प्रक्रिया लोगों को मुख्यधारा में लाना है। यह जाति, वर्ग, लिंग, धर्म और भाषाओं के बावजूद हर व्यक्ति और समुदाय की भलाई के बारे में है। यह समाज में बाधाओं को दूर करने में मदद करता है ताकि लोग सम्मान के साथ जीवन जी सकें। यह पत्र जाति के संबंध में दलित महिलाओं की स्वयं की सशक्तिकरण के क्षेत्र की वास्तविकता और आत्म धारणा पर गंभीरता से विचार करता है।

कुट शब्दः सशक्तिकरण, धारणा, दलित महिला, जाति

प्रस्तावना
महिला सशक्तीकरण किसी भी सामाजिक परिवर्तन को लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किसी भी समाज या राष्ट्र को सशक्त महिलाओं के बिना उन्नत नहीं माना जा सकता है। सशक्तिकरण की मूल अवधारणा शक्ति के भीतर अंतर्निहित है। शक्ति स्वयं यह उम्मीद करती है कि इसे दोनों लिंगों द्वारा समान रूप से प्रयोग किया जाना चाहिए। शोषण, भेदभाव और हिंसा, बेरोजगारी से जुड़ी कुछ प्रमुख शर्तें हैं। महिलाओं के सशक्तीकरण का मुद्दा ऊपर से नीचे तक सत्ता के सवाल पर गहन चर्चा की मांग करता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि महिलाओं को प्राकृतिक स्वतंत्रता के साथ–साथ संवैधानिक (कानूनी) का आनंद लेने में सक्षम होना चाहिए। यह आत्म–शक्ति, आत्म–नियंत्रण, आत्म–विश्वास, आत्म–निर्भरता, आत्म–विकल्प, आत्म–सम्मान और आत्म–सम्मान की प्रक्रिया है जो सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक दबावों से रहित है। विश्व बैंक सहित अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों ने विकास सहायता में मुख्यधारा 'को प्राथमिकता दी है।
विभिन्न लेखकों के विचारों के आधार पर, सशक्तिकरण को संसाधनों तक पहुंच, सामग्री की भलाई, निर्णय लेने की शक्ति और दबाव के बिना व्यक्तिगत विकल्प बनाने की क्षमता के रूप में संदर्भित किया जा सकता है। निर्णय लेने से महिलाओं को समुदाय के परिप्रेक्ष्य को बदलने में मदद मिलती है। यह एक तरह से व्यक्तिगत सशक्तिकरण है जो सामुदायिक सशक्तिकरण के साथ जुड़ा हुआ है, जिसका अर्थ है सामुदायिक स्तर पर किसी का जीवन बदलना। इसका अर्थ है कि जो लोग अपने जीवन में अधिक स्वतंत्रता का प्रयोग करते हैं, वे अधिक सशक्त हो सकते हैं। इस प्रकार स्वतंत्रता और विकल्प महिलाओं के सशक्तिकरण की तलाश में रणनीतिक प्रस्ताव हैं। कोई भी इस बात को आसानी से आकर्षित कर सकता है कि दुनिया के किसी भी देश में लैंगिक समानता के बिना कोई भी विकास या प्रगति संभव नहीं है।

दलित महिलाओं के सशक्तीकरण और धारणा की रूपरेखा
सशक्तिकरण का सिद्धांत शक्ति और शक्तिहीनता की अवधारणा की जांच करता है। सशक्तिकरण की प्रक्रिया घर, कार्यस्थल, बाजार और समाज में महिलाओं की अधीनस्थ स्थिति को समग्र रूप से

संबोधित करती है। यह भी अच्छी तरह से समझना महत्वपूर्ण है कि श्रम का यौन विभाजन समाज के सामाजिक स्तंभ के रूप में बरकरार है। सशक्तिकरण महिलाओं के रोज़मर्रा के रहन–सहन की स्थितियों जैसे लिंग, जाति, धर्म, संस्कृति, सामाजिक समावेश आदि को सुधारने पर केंद्रित है। वास्तव में यह वह प्रक्रिया है जो उपेक्षित लोगों को उपलब्ध अवसरों को हासिल करने और उन्हें आत्मनिर्भरता, व्यक्तियों के कल्याण, और बड़े पैमाने पर समुदाय के लिए कौशल विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करती है। दूसरे शब्दों में अपनी पसंद बनाने और उन्हें वांछित कार्रवाई में स्थानांतरित करने के लिए व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह की क्षमता को बढ़ाना है। यहां चार खंडों में सशक्तिकरण का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

1. मनोवृत्ति, विश्वास और मूल्य

हम इसे तीन उप–वर्गों में देख सकते हैं जैसे (1) सामाजिक दृष्टिकोण; (2) सामाजिक विश्वास और (3) सशक्तिकरण के मूल्य। आज तक सामाजिक प्रवृत्ति महिला के सशक्तीकरण को एक प्रतिलोम विकास के रूप में देखती है और इसलिए यह इस तरह के हलकों में बहुत अधिक विवाद और बहस है। महिलाओं के सशक्तीकरण के संबंध में सामाजिक धारणा को महिलाओं के सशक्तीकरण में सशक्त या प्रतिष्ठित करते हुए बदलने की आवश्यकता है। सामाजिक मान्यता वह बोधगम्यता है जो महिलाओं के सशक्तीकरण की ओर ले जानी चाहिए। समाज को खुद इस बात पर भरोसा करना चाहिए कि महिला सशक्तीकरण सफलतापूर्वक काम कर सकता है, लेकिन हम जो देख रहे हैं वह दूसरा तरीका है।

महिलाओं का सशक्तिकरण विश्वसनीय समाज की अपेक्षा करता है जो महिलाओं को आगे बढ़ने में सहायता कर सकता है। सामाजिक विश्वास महिलाओं के सशक्तिकरण को शक्तिशाली रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक बार जब महिला सशक्तिकरण हो जाती है या सशक्तिकरण की डिग्री अधिक हो जाती है, तो वे समाज में स्त्री–मूल्यों को आगे ला सकती हैं। इस प्रकार सशक्तिकरण के सामाजिक मूल्य समाज को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

2. सामूहिक अनुभवों के तहत सामाजिक मान्यता

सामूहिक अनुभवों के तहत सामाजिक मान्यता आपसी अनुभव, सूचना, ज्ञान और व्यक्तिगत अहसास साझा करने से संबंधित है। इस तरह के अनुभव उन्हें समाज के बुरे अनुभवों पर काबू पाने के संदर्भ में उनके दृष्टिकोण को समझने में मदद करेंगे और अपने सकारात्मक दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने के लिए एक स्वस्थ समाज को बनाए रखने के लिए सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए समुदाय और व्यक्तियों को प्रेरित करने की क्षमता रखते हैं।

3. सशक्तीकरण की सामाजिक परिधि

यह ज्ञान, कौशल और महत्वपूर्ण दृष्टिकोण के साथ संलग्न है। इसके तहत, सशक्तिकरण के संबंध में सभी उपलब्ध संसाधनों का ज्ञान बहुत महत्व रखता है। संसाधनों के ज्ञान के बिना कोई भी समाज जीवित या टिक नहीं सकता था। सशक्तिकरण ज्ञान, कौशल और महत्वपूर्ण दृष्टिकोण के माध्यम से विकास को जन्म दे सकता है। व्यक्ति की पहुंच के भीतर सूचना और पर्याप्त कौशल को अद्यतन करने के लिए सशक्तिकरण की सामाजिक परिधि की मांग है। यहां व्यक्ति अपनी मनोवैज्ञानिक शक्तियों और कमजोरी का भी विश्लेषण करता है।

4. क्रिया

सशक्तिकरण की ऐसी प्रक्रिया महिलाओं को रचनात्मक कार्य योजना और रणनीति बनाने में मदद करती है। वेलर्टियन (1992) के अनुसार, सशक्तीकरण एक सामाजिक कार्रवाई प्रक्रिया है जो व्यक्तिगत और सामुदायिक नियंत्रण, राजनीतिक दक्षता, समानता में सुधार, सामुदायिक जीवन और सामाजिक न्याय के लक्ष्य के प्रति लोगों, संगठन और समुदायों की भागीदारी को बढ़ावा देती है।

व्यक्तिगत सशक्तिकरण की इस प्रक्रिया में सशक्तिकरण के विश्लेषण के लिए मुख्य विषय हैं–

1. शक्तिहीनता

शक्तिहीनता बेरोजगार होने की एक स्थिति है, जो समाज में महिलाओं के सामाजिक वर्चस्व और स्थिति की व्याख्या करती है। शक्तिहीन का मुख्य कारण भय और विफलता है। यह अक्सर अस्वीकृति के डर पर आधारित होता है। यह अपराधबोध, शर्म और अकेलेपन की भावना को जारी रखता है। इस अनुभव को अव्यवस्थित स्थिति में विकसित किया जाता है।

2. सामाजिक अलगाव

महिलाओं को घर, सार्वजनिक स्थानों और निजी स्थानों पर अलग–थलग कर दिया जाता है। विशेष रूप से, पितृसत्तात्मक व्यवस्था परिवार की निर्णय प्रक्रिया में भाग लेने के लिए महिलाओं को प्रोत्साहित या प्रोत्साहित नहीं करती है। यदि निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए महिलाओं को ऐसे अवसर प्रदान किए जाते हैं, तो वे घरेलू सेट–अप को समृद्ध करने में भी योगदान दे सकती हैं। इसलिए, इस अलगाव से अपूरणीय हानि होती है। उदाहरण के लिए, उदाहरण के लिए, लड़कियों को शिक्षा प्रदान करने के लिए दृष्टिहीन लड़कों को गंभीरता से ध्यान नहीं दिया जाता है। समाज का मानना है कि लड़कियों को शिक्षित करने से कोई उत्पादक परिणाम नहीं मिलेगा। इसलिए, लड़कियों को शिक्षा से अलग कर दिया जाता है। पुरुषों को यह समझाना बेहद जरूरी है कि महिलाएं समाज का हिस्सा और पार्सल हैं। इसलिए, किसी भी महिला को समुदाय से अलग या अलग नहीं किया जाना चाहिए।

3.जाति

जाति का कलंक सामाजिक अलगाव का मुख्य कारण है। हम गाँव के बाहर स्थित हैं और इसलिए हमें गाँव का हिस्सा नहीं माना जाता है। केवल चुनाव प्रक्रिया में उच्च जाति समुदाय हमें बैठक के लिए आमंत्रित करता है। महिलाएं चुनावी प्रक्रिया का केवल एक हिस्सा हैं। उच्च जाति की महिलाएं आर्थिक और सामाजिक रूप से बहुत मजबूत हैं। यही कारण है कि हम दलित महिलाएँ कभी भी निर्णय लेने की प्रक्रिया का हिस्सा नहीं होती हैं। हम उन घरों में अलग–थलग हैं जहाँ परिवार में हमारी राय को कभी महत्वपूर्ण नहीं माना जाता। हमारे लिए सामाजिक अलगाव न केवल शारीरिक अपवर्जन है, बल्कि गांव से बड़े आर्थिक और राजनीतिक अलगाव में है। '

4. गरीबी

अमर्त्य सेन (1985) का तर्क है कि गरीबी किसी दिए गए समाज में कार्य करने की क्षमता की कमी है। यह जीवन यापन के एक सक्रिय और सामाजिक रूप से स्वीकार्य मानक की कमी या अक्षमता है। गरीबी जरूरतों, कम साधनों या आय की कमी और क्रय शक्ति की कमी के मूल्यांकन पर आधारित है। यह निम्न आय वर्ग की उन महिलाओं का निराशाजनक अनुभव है, जो उन्हें समाज से बाहर करती हैं। दलित महिलाएं आर्थिक रूप से अपने अस्तित्व के लिए प्रमुख जातियों पर निर्भर हैं। इसलिए, आर्थिक स्वतंत्र होने के लिए सशक्तिकरण महत्वपूर्ण है।

5. दुर्व्यवहार

गालियाँ बहुत आम हैं और यह सामाजिक वातावरण के भीतर असुरक्षित होने की भावना लाती है। दुरुपयोग की परिस्थितियों में,

महिलाएं कई अवांछनीय बाधाओं का सामना करती हैं। सामाजिक स्थानों में यह अलगाव महिलाओं के आत्मविश्वास और आत्म–सम्मान को कम करता है। ऐसी अवांछनीय असुरक्षाएं महिलाओं के लिए अपमानजनक स्थिति को दूर करने के लिए सभी वेंटिलेशन को अवरुद्ध करती हैं। जबकि नशेड़ी की स्थिति और मजबूत हो जाती है, महिलाओं के इस समाजीकरण ने उन्हें पूरी तरह से अलग कर दिया। दलित महिला के साथ दुर्व्यवहार आम है क्योंकि उसे प्रमुख जाति के पुरुषों द्वारा यौन वस्तु के रूप में माना जाता है। उन्हें लगता है कि दलित महिलाएं आसानी से उपलब्ध हैं। यौन संबंध चूंकि वे प्रमुख जाति के पुरुषों के बंधुआ मजदूर हैं। इसलिए, वे उनका यौन शोषण करते हैं। '

बेरोजगारी के कारक

1) सहकर्मी समूह से समर्थन की कमी

एक अच्छी तरह से समन्वित सहकर्मी समूह दलित वर्गों की महिलाओं के व्यक्तिगत सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ऐसे सहकर्मी समूह समर्थन की कमी है, जो एक दूसरे से भावनात्मक और व्यावहारिक समर्थन के माध्यम से व्यक्तिगत सशक्तिकरण को बनाए रख सकते हैं। यह महिलाओं को उनके आत्मसम्मान, आत्मविश्वास और व्यक्तिगत स्थिति और व्यक्तिगत प्रेरणा को विकसित करने में मदद करता है। सहकर्मी सहायता तंत्र के माध्यम से महिला सशक्तिकरण हो सकता है।

2) मूल्यवान संसाधनों तक पहुंच का अभाव

सामाजिक असमानता वह स्थिति है जहां महिलाओं को समाज में मूल्यवान संसाधनों, सेवाओं और स्थिति तक असमान पहुंच है। असमानता का मतलब सामाजिक संबंधों की प्रणाली है जो समाज में लोगों की स्थिति को इंगित करने वाले पदानुक्रम को निर्धारित करती है। यह समाज में सम्मान, प्रतिष्ठा, सम्मान और प्रतिष्ठा से संबंधित है। शक्तिशाली जाति वर्ग समाज में संसाधनों को नियंत्रित करते हैं। महिलाएं तब अक्षम होती हैं जब उनके पास मूल्यवान संसाधनों की कम पहुंच होती है।

3) सहभागिता

भागीदारी गतिविधियों में भागीदारी है, जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि की महिलाओं के लिए सशक्तिकरण की प्रक्रिया है। यह आत्मविश्वास को बढ़ाता है जहां संसाधनों, सूचना, विकल्प और अवसर तक व्यक्तिगत पहुंच पर ध्यान दिया जाता है। यह संभव है जब महिलाओं ने गतिविधि में भाग लिया। दलित महिलाओं की भागीदारी का प्रश्न केवल निजी स्थानों में निर्णय लेने से संबंधित नहीं है, बल्कि कार्रवाई में शामिल करने के लिए भी है।

निष्कर्ष

दलित महिलाओं का बेरोजगारी महत्व है क्योंकि यह परिवारों, समुदायों और समाज में शक्तिहीनता को इंगित करता है। भारतीय चेतना और संस्कृति लोगों की शक्ति और जाति–आधारित स्तरीकरण पर आधारित है, जो इतिहास की शुरुआत से दलित महिलाओं को प्रभावित करती है। सशक्तीकरण उस स्थिति पर है जो जागरूकता के स्तर और अभिगम शक्ति की वर्तमान स्थिति को दर्शाता है। दलित महिलाओं के सशक्तीकरण में हस्तक्षेप के एक विशेष सेट की आवश्यकता होती है जो भेदभाव के अनुभवों के कारण उनकी शक्तिहीनता को कम कर सकता है। स्पष्ट है कि दलित महिलाएं अपनी वर्तमान स्थिति, संसाधनों की कमी और शक्तिहीन स्थिति के बारे में जागरूक हैं। वे इस स्थिति को बदलने के लिए रणनीति बदलना चाहते हैं। एम्पावरमेंट को 'जेंडर' प्रक्रिया के रूप में समझा जाता है। लेकिन दलित महिलाओं के संदर्भ में, जाति सशक्तीकरण के लिए बाधा है। इसने संकेत दिया कि पूर्वग्रहित छवि के आधार पर दलित महिलाओं की सामाजिक स्थिति यह तय करती है कि वे अन्य महिलाओं से अलग हैं। जाति किसी भी मूल्यवान संसाधनों तक पहुँचने के लिए दलित महिलाओं को प्रतिबंधित करती है। यह उन्हें सामाजिक स्थिति में सुधार करने के अवसर से मना कर देता है। जातिगत उत्पीड़न के खिलाफ सामूहिक सामूहिक, संगठित प्रतिरोध और समूह ज्ञान से इसे तोड़ा जा सकता है। ऐसी संभावित रूप से महत्वपूर्ण दलित महिलाएं जाति, वर्ग, लिंग और अन्य चौराहों की सीमाओं से परे सोच सकती हैं।

दलित महिलाओं के अनुभव के कई स्तर और पैटर्न सशक्तिकरण की प्रक्रिया को चुनौती देते हैं ताकि सशक्तिकरण की प्रक्रिया और जाति और लिंग के प्रतिच्छेदन पर पुनर्विचार किया जा सके। अब तक दलित महिलाएं चिंतित हैं, समस्या सिर्फ गैर–स्वीकार्यता तक सीमित नहीं है, विविधता और आधार के सिद्धांतों को फिर से आकार देने की जरूरत है।

संदर्भ

1. बेट्टा, एच. (2007), महिला सशक्तिकरण के उपायों में क्या कमी है? मानव विकास जर्नल, 7 (2)।
2. भगवत, वी. (1995), दलित महिलाएँः कुछ आलोचनात्मक मुद्दे और मुद्दे, पी. जोगदंड (एड.) में, दलित महिलाएँः मुद्दे और परिप्रेक्ष्य, ज्ञान प्रकाशन हाउस, नई दिल्लीः पृ.69
3. हूर, एम. एच. (2006), सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में सशक्तिकरणः अनुशासन में प्रक्रिया और घटक की एक प्रवृत्ति का पता लगाना। जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी साइकोलॉजी, 34 (34): 523–40।
4. कुमार, वी. (2009), भारतीय जाति व्यवस्था मीडिया और महिला आंदोलन में दलित महिलाओं का पता लगाना, सामाजिक परिवर्तन, 39: 64।
5. लोर्ड, जे. और पी. हचिसन (1993), सिद्धांत और व्यवहार के लिए सशक्तिकरण प्रतिकृति की प्रक्रिया। कनाडाई जर्नल ऑफ कम्युनिटी मेंटल हेल्थ, 12 (1): 5– 22।
6. लुटराल, सी., एस. क्विरोज़, डब्ल्यू.सी. स्क्रूटन और के. बर्ड। (2009), समझ और वचम युक्तिकरण सशक्तीकरण। प्रवासी विकास संस्थान, नई दिल्ली, पृ..71